P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-2* May- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों का आगमन– एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

बीरपाल सिंह ठेनुआं
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
डिपार्टमेन्ट ऑफ सोसियोलॉजी एण्ड पॉलिटीकल साइंस,
फैकल्टी ऑफ सोसल साइंसेस, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा

दीपमाला श्रीवास्तव
समाज विज्ञान संस्थान,
डीन ऑफ आर्टस फैकल्टी,
डॉ0 भीमराव आम्बेदकर विश्वविद्यालय,
आगरा

ज्योत्सना कुलश्रेष्ठ
पूर्व स्कॉलर,
समाज विज्ञान संस्थान,
डॉ0 भीमराव आम्बेदकर विश्वविद्यालय,
आगरा

सारांश

ब्रज क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही अप्रवासियों का आवागमन होता आया है। इस आगमन का मुख्य उद्देश्य धार्मिक एवं राजनैतिक ही माना जाता है। प्राचीनकाल से ही भारतवर्ष विभिन्न धर्मों की पुण्यस्थली रहा है। विश्व में भारत को छोड़कर कोई अन्य देश ऐसा नहीं है, जहाँ धर्मों की ऐसी विविधता और बहुलता पायी जाती हो। भारत में प्रमुख रूप से 6 धर्म हैं, जिसमें हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन हैं, इनके अतिरिक्त पारसी तथा यहूदी भी हैं। जिसमें इस्लाम, ईसाई, यहूदी और पारसी धर्म विदेशों से भारत में आये हैं, शेष भारतीय धर्म हैं। धार्मिक विविधता के कारण यहाँ विभिन्न धर्मावलम्बियों के मध्य संघर्ष और तनाव उत्पन्न होते रहे हैं। धर्म, धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता भारत की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। यह धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के आगमन में भी देखने को मिलती है।

मुख्य शब्द : ब्रज क्षेत्र, अप्रवासी, धार्मिक परिपेक्ष्य, राजनैतिक परिपेक्ष्य, संस्कृति, आवागमन, सहिष्णुता।

प्रस्तावना

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 29.9 प्रतिशत भाग ऐसा था अपने जन्म स्थान को छोड़कर दूसरे स्थानों पर रह रहा था। जनगणना के दौरान यदि व्यक्ति की गणना उसके जन्म स्थान से दूसरे स्थान पर होती है तो उसे प्रवासी कहा जाता है (जनगणना 2001)। जनसंख्या या व्यक्तियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना कोई नई बात नहीं है, ऐसा प्राचीन काल से ही होता चला आ रहा है, जो विकास के विभिन्न स्तरों पर क्षेत्रीय असमानता को कम करता है (दिनेशप्पा तथा श्रीनिवास 2014)। व्यक्तियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना–जाना दो रूपों में होता है– प्रथम किसी स्थान विशेष पर आकर बस जाना दूसरे अपने स्थान को छोड़ना अर्थात प्रवास और अप्रवास। प्रवास अत्यधिक प्राचीन है। मानव इतिहास के प्रारम्भ से ही आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक कारणों से मनुष्य वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप में प्रवास करते रहे हैं। जनगणना के आंकड़ों के अनुसार वर्तमान में रोजगार विवाह के बाद प्रवास का सबसे बड़ा कारण है (जनगणना 2001)। लेकिन यह भी सत्य है कि ब्रज क्षेत्र, विशेषकर मथुरा, वृन्दावन एवं गोवर्धन में प्रवास का प्रमुख कारण धर्म एवं ब्रज की संस्कृति है। ब्रज प्राचीनकाल से ही एक सुप्रसिद्ध क्षेत्र रहा है। यहाँ की मौलिक संस्कृति का आधार और इसकी मूल चेतना भी धर्म ही है। अतः यहाँ की संस्कृति धर्म प्रधान संस्कृति है ब्रज के रज रज में धर्म बसा है। वैसे तो यहाँ सनातन धर्म/भागवत धर्म प्रधान है लेकिन अन्य धर्म–सम्प्रदायों का भी यहाँ खूब विकास हुआ है और यहाँ की धार्मिक संस्कृति ने विभिन्न कालों में सम्पूर्ण देश तथा विदेशों के अधिकांश भागों को भी प्रभावित किया है तथा देश–विदेश को भी एकता के सूत्र में बाँधने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों का आगमन 'एक समाजशास्त्रीय अध्ययन' के सन्दर्भ में हम समझ सकते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण के पहले से महाभारत के बाद बुद्ध तक (ई0 पूर्व–1400 से ई0 पूर्व 600 तक) शक कुषाण काल लगभग (ई0 पूर्व–100 से 20 तक) गुप्तकाल (ई0 200 से ई0 500 तक) मध्यकाल (550 से ई0 1194 तक) मुगलकाल में ब्रज प्रदेश (1506 ई0 से 1718 ई0 तक) जाट मराठा काल (1718 ई0 से 1803 ई0 तक) ब्रिटिश शासनकाल (1803 ई0 से 1947 तक) ब्रज क्षेत्र में अधिकांशतः अप्रवासी शासकों का अधिपत्य रहा है, जो धार्मिक एवं राजनैतिक महत्व ही अप्रवासियों के आगमन का मुख्य उद्देश्य रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों का आगमन धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना।
2. ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों का आगमन राजनैतिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना।

शोध प्ररचना

समाजविज्ञानों में शोध प्ररचना का कार्य अनुसंधान को निश्चित दिशा प्रदान करना होता है। शोध प्ररचना का मुख्य कार्य सामग्री संकलन की पद्धतियाँ एवं विधियों की त्रुटियों को कम कर मानवश्रम की बचत करना है। प्रस्तुत अध्ययन 'ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों' का आगमन 'एक समाजशास्त्रीय अध्ययन' वर्णनात्मक शोध प्ररचना' द्वारा स्पष्ट किया गया है।

साहित्य का अध्ययन

ब्रज के सम्बन्ध में सबसे अधिक वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं। ये ग्रन्थ विभिन्न समयों में संग्रहित किये गये हैं। वह ग्रन्थ हरिवंश, विष्णु, मत्स्य, भागवत बराह, पद्म तथा ब्रह्मवर्त हैं। इन ग्रन्थों में प्राचीन वंशावलियों, युद्ध, धर्म, दर्शनकला तथा सामाजिक जीवन एवं आवागमन सम्बन्धी विस्तृत चर्चा मिलती है। ब्रज क्षेत्र में आने वाले विदेशी लेखकों ने भी यहाँ का वर्णन किया है। इन लेखकों में यूनानी, चीनी, मुसलमान, फ्रांसीसी तथा अंग्रेज प्रमुख हैं। उक्त लेखकों के वर्णनों के अतिरिक्त फारसी तथा अरबी की किताबों में भी अपेक्षित सामग्री मिलती है। इस प्रकार की सामग्री 'इलियट डाउसन' द्वारा सम्पादित 'हिस्ट्री आफ इण्डिया' तथा सी.ए. स्टोरीकृत' 'परशियन लिटरेचर' (जिल्द–जिल्द भाग 3) आदि ग्रन्थों में संकलित हैं। ब्रिटिशकाल में तैयार की गई सेटलमेन्ट एवं अन्य रिपोर्टों में तथा गजेटियर में ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों का आगमन एवं ब्रज क्षेत्र के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की सामग्री संग्रहित है। कई मुसलमान लेखकों ने भी अपने ग्रन्थों में ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के आगमन की चर्चा की है। इनमें सबसे पहला लेखक 'अल–उत्बी' ज्ञात होता है। इसने अपनी किताब 'तारीख–ए–यामिनी' में ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के आवागमन सम्बन्धी वर्णन किया हैं। इन सब सामग्री का यथावश्यक उपयोग प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है।

इनके अध्ययनों के अतरिक्त प्रवास एवं अप्रवास पर सिंह (2009) ने भारत के उत्तरी पूर्वी राज्यों विशेषकर नागालेण्ड में अवैध अप्रवास का अध्ययन कर स्पश्ट किया कि यह भारत की सुरक्षा के लिए कितना खतरनाक है। पिकोट (2013) ने अप्रवास के सामाजिक एवं आर्थिक उद्देश्यों का अध्ययन किया। प्रवास के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने वालों में सिंगापुर एवं श्रीनिवास (2014) भी हैं। सापोवाडिया (2015) ने भारत में सुधार और प्रवास प्रतिमान के पिरामिड प्रभाव को जानने का प्रयास किया। सानाथनील (2016) ने जर्मनी के कीसल नगर पर प्रवास के प्रभाव का अध्ययन किया।

ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों का आगमन– धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष्य

धर्म शब्द ''धृ'' संस्कृत धातु से बना है जिसका अर्थ होता है ''धारण करना'' अर्थात जिसके द्वारा ब्रह्माण्ड धारण किया जाता है वही धर्म है। ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के शुभारम्भ की कई सम्भावनायें हैं कृष्णोपासक धर्म सम्प्रदायों का प्रचलन होने से वैष्णव धर्माचार्यों और भक्त महानुभावों का कृष्ण के लीलाधाम ब्रज के प्रति आकर्षण हो गया था। वे लोग ब्रज की यात्रा करने और वहाँ के लीला स्थलों के दर्शन से लाभान्वित होने के लिए स्वभावतः ही उत्सुक होने लगे। उस काल में उनकी मनोभिलाषा की पूर्ति होना बड़ा कठिन था। उस समय एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करना आजकल की तरह सरल और सुगम नहीं था, फिर उस काल में समस्त ब्रज प्रदेश दिल्ली के सुल्तानों की मजहबी तानाशाही से आतंकित था। अतः धार्मिक कार्य के लिये आना तो और भी संकटपूर्ण था। ऐसी कठिन परिस्थिति में भी उस काल में जिन भक्तजनों ने ब्रज में आकर निवास किया था, उनके साहस और उत्साह की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम ही होगी। यहाँ पर उस काल में आने वाले कतिपय प्रमुख महानुभावों का उल्लेख किया गया है।

श्री निम्बार्काचार्य जी का ब्रज आगमन

कृष्णोपासक वैष्णव धर्माचार्यों में श्री निम्बार्काचार्य पहले महानुभाव थे जिन्होंने अपने सम्प्रदाय में 'राधा–कृष्ण' की उपासना को मान्यता दी थी, और ब्रज में निवास करने का आयोजन किया था। वे अपने सुदूर स्थानों से चलकर मार्ग के कष्टों और असुविधाओं को सहन करते हुए ब्रज में आये और ब्रज की पावन भूमि में उनका मन रम गया, अतः वे ब्रज भूमि में स्थायी रूप से निवास करने लगे। ऐसा जान पड़ता है कि वे 13 वीं शताब्दी से पहिले आये थे। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर विविध स्थानों से कृष्णोपासक भक्तजन ब्रज में आने लगे। ऐसे भक्तजनों में लीला शुक विल्वमंगल, रसिक राज जयदेव, निवार्क सम्प्रदाय के आचार्य सर्वश्री मांगल भट्ट, केशव कश्मीरी भट्ट तथा यतिराज, माधवेन्द्रपुरी, उनके शिष्य श्री ईश्वरपुरी और प्रवर्तक श्री बल्लभाचार्य के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

श्री चैतन्यजी का ब्रज आगमन

श्री चैतन्य देव ने सन् 1573 की शरत ऋतु में अपनी चिरइच्छित ब्रज यात्रा के लिए प्रस्थान किया। उनके साथ केवल दो व्यक्ति थे–एक ब्राह्मण सेवक और दूसरा बलभद्र भट्टाचार्य नामक भक्तजन। अतः ब्रज का प्राकट्य चैतन्य महाप्रभुजी के द्वारा ही किया गया। इन्हीं के भक्ति भाव से प्रभावित होकर अनेक बंगाली, उड़िया एवं अन्य पूर्वी प्रदेशों से अप्रवासी ब्रज क्षेत्र में आये हैं और वर्तमान समय में भी दिन–प्रतिदिन बड़ी संख्या में आ रहे हैं।

श्री भक्ति वैदान्त स्वामी प्रभुपादजी का ब्रज आगमन

श्री भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद जी के द्वारा ही विदेशी अप्रवासियों का शुभारम्भ देश–विदेश में भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार से हुआ है। प्रभुपाद जी ने 1959 ई0 में ब्रज की यात्रा की और यहीं रहने लग गये। 1965 में गुरुदेव का भक्ति प्रचारोदेश्य पूरा करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका चले गये। 1966 में इन्होंने 'अर्न्तराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ 'इस्कान' की स्थापना की। 1977 ई0 को श्री प्रभुपाद जी ने इस संघ को विश्वभर में एक बृहद संगठन बना लिया। इन्हीं के प्रचार–प्रसार से प्रभावित होकर विदेशी अप्रवासियों का

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-2* May- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

रूझान भारतीय ब्रज की वैदिक संस्कृति की तरफ हुआ है और इसी से प्रभावित होकर दिन–प्रतिदिन विदेशी अप्रवासियों की संख्या में बढ़ौत्तरी हो रही है।

ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों का आगमन– राजनैतिक परिपेक्ष्य

ब्रज क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही देश एवं विदेश से अप्रवासियों का आवागमन जारी रहा है। जो राजनैतिक एवं धार्मिक दोनों ही कारणों से हुआ है। इन्हीं कारणों की वजह से ब्रज क्षेत्र में राजनैतिक उतार–चढ़ाव आते रहे हैं। जैसे–श्रीकृष्ण के समय में कंस द्वारा शासन हुआ, उसके बाद धनुयोग और आक्रूर का ब्रज आगमन हुआ, फिर जरासंध की ब्रज में मथुरा पर चढ़ाई हुई। इसके बाद महाभारत तथा परीक्षित का शासन हुआ इसके पश्चात अनेक प्रकार के राजनैतिक बदलाव आते रहे हैं। ब्रज क्षेत्र में प्राचीनकाल से देश एवं विदेश से अप्रवासी आते रहे हैं। इन अप्रवासियों ने प्रायः यहाँ आँखों देखा हाल लिखा है। जो समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए बहुत उपादेय है।

सबसे पहले पुराने लेख यूनानी यात्रियों के मिले हैं। जो कि ई0 पू0 चौथी शदी के अन्त में मैगस्थनीज नामक यूनानी यात्री भारत आया जिसने ब्रज क्षेत्र का भी उल्लेख किया है। यूनानियों के अतिरिक्त अनेक चीनी यात्रियों ने भी ब्रज क्षेत्र का वर्णन किया है। साथ ही मुगल यात्रियों ने भी ब्रज क्षेत्र का वर्णन किया है। जिससे तत्कालीन ब्रज क्षेत्र की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।

मुगलकाल में ब्रज प्रदेश 1506 ई0 से 1718 ई0

भारत में 1506 ई0 में मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई, जिसमें ब्रज भी सम्मिलित था। इन मुगल शासकों में बाबर, हुमायूँ अकबर आदि का शासन काल रहा, जिसमें अकबर के समय यहां के तीर्थ स्थानों की उन्नति भी हुई। इसके बाद के शासकों विशेषकर औरंगजेब की कट्टरतापूर्ण धार्मिक नीति के चलते हुए मन्दिरों को विध्वंस किया और हिन्दुओं पर भी अत्याचार किया गया। मुगलकाल के अन्तिम दिनों में ब्रज क्षेत्र की स्थिति सोचनीय हो गयी। यूरोपीय धर्मप्रचारकों का भी ब्रज क्षेत्र में आगमन हुआ और इनके द्वारा भी यहां नये मन्दिरों का निर्माण किया गया।

जाट मराठा काल 1718 ई0 से 1803 ई0

ब्रज क्षेत्र में मुगल शासनकाल में ही जाटों ने विद्रोह कर मुगल शासकों से ब्रज को मुक्त करा लिया। जाट शासन काल में ब्रज में अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया गया। भरतपुर के जाट शासक ब्रज में गोर्वधन को अपना ईष्ट देव मानते थे। मराठों के विख्यात माधव जी सिंधिया हिन्दुत्व एवं ब्रज के अनन्य प्रेमी थे। उन्होंने स्वयं भी ब्रज भाषा में भक्तिपूर्ण पदों की रचना की और उनकी रूचि वहाँ पर दर्शनीय इमारतें बनवाने की ज्यादा थी इसी रूचि के कारण ब्रज में अनेक सुन्दर भवन, मन्दिर, कुंज, छतरी और दुर्गों का निर्माण किया गया था। ये इमारतें ब्रज की वास्तुकला के अनुपम नमूने हैं।

ब्रिटिश शासन काल 1803–1947 ई

भारत के अन्य प्रदेशों की तरह ब्रज पर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आधिपत्य रहा है। जिसमें अंग्रेजों द्वारा ब्रजवासियों पर किये गये अत्याचार किसी से छिपे नहीं है।

भारत धर्म प्रधान देश है, भारतीयों को पता है कि आध्यात्मिक जीवन, भौतिक जीवन से अधिक महत्वपूर्ण है। यही भारत है। किन्तु वे अब अपना ध्यान भौतिकता की ओर मोड़ रहे हैं। ये भौतिक जीवन इन्हीं पाश्चात्य देशो की देन है। ब्रिटिश नीति यही थी कि यदि भारतवासी भारतीय बने रहे तो उन पर अपना शासन करना मुश्किल होगा। ब्रिटिश लोग दक्ष राजनीतिक थे। उनकी बुद्धिमतापूर्ण नीति थी कि भारत के आध्यात्मिक स्तर को कुचलने दिया जाये। एक ब्रिटिश राजनीतिक मैकाले ने – सम्पूर्ण परिस्थिति का अध्ययन किया, उसने रिपोर्ट दी कि यदि आप भारतीयों को भारतीय बना रहने देंगे तो आप भारत पर कभी भी शासन नहीं कर सकते। इन्हीं ब्रिटिश की वजह से हमारे देश का पतन होता आया है और ऐसा लगता है कि यह भारत में धर्म की आड़ में फिर से अपनी जड़ें मजबूत न कर दे।

ब्रज प्रान्त के निर्माण का प्रश्न

15 अगस्त सन् 1947 ई0 का दिन ब्रज भूमि के लिए ही नहीं बल्कि पूरे भारत के इतिहास में महान दिवस है। इसी दिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् 1954 ई0 के प्रारम्भ में उत्तर प्रदेश के विभाजन का प्रश्न सामने लाया गया, प्रादेशिक विधान सभाइयों की भी एक बड़ी संख्या द्वारा इसका समर्थन किया गया। कुछ लोगों ने यह सुझाव रखा कि प्रदेश के दो भाग किये जायें और पश्चिमी भाग का नाम ब्रज प्रदेश रखा जाये। राजनेताओं की ओर से सुझाव यह भी आया कि उत्तर प्रदेश का चार भागों में विभाजन कर दिया जाना चाहिए, जिसमें ब्रज क्षेत्र को पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सम्मिलित कर देना चाहिए। परन्तु नव प्रान्त का यह निर्माण आन्दोलन आगे न बढ़ सका। भारत के राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में ब्रज का महत्वपूर्ण स्थान है।

निष्कर्ष

ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के आने के धार्मिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक कारणों के अलावा भी अन्य कारण हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भी ब्रज भूमि में देशी एवं विदेशी आधिपत्य की जड़ें मजबूत थी। जहाँ देश एवं विदेशों के लोग आया जाया करते थे। इस आवागमन से ब्रज में धार्मिक प्रवृत्तियों के साथ–साथ राष्ट्रीय भावनाओं की भी अभिवृद्धि हुई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति 15 अगस्त सन् 1947 ई0 का दिन ब्रज भूमि ही नहीं वल्कि पूरे भारत के इतिहास में महान दिवस है। शताब्दियों की परतन्त्रता के बाद ब्रज की भी जनता ने अपने को स्वतन्त्र नागरिक के रूप में पाया, परन्तु इस स्वतन्त्रता दिवस के साथ ही हृदय को दहलाने वाली घटनायें भी जुड़ गयी। इन घटनाओं में ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुओं तथा मुसलमानों को विभाजित कर दिया। इस विभाजन के साथ ही पश्चिमी पंजाब से हिन्दू तथा पूर्वी पंजाब से मुसलमान बड़ी संख्या में स्थानान्तरित हुए। साम्प्रदायिक संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण जो भयंकर मार–काट और धन–जन की बर्बादी पंजाब तथा कुछ अन्य प्रदेशों में हुई व हृदय विदारक थी। पंजाब सीमा प्रान्त और सिन्धु के बहुत से विस्थापित लोग ब्रज क्षेत्र में बड़ी संख्या में शरणार्थी के रूप में आये। भारतीय जनमानस एवं सरकार ने बड़े धैर्य

के साथ इन समस्याओं का सामना किया और धीरे–धीरे यहीं की संस्कृति में रच बस गये।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ब्रज क्षेत्र में कृष्णकाल के पहले से लेकर वर्तमानकाल तक अप्रवासियों का आगमन अनेक कारणों से होता आया हैं लेकिन यह भी सत्य है कि इन कारणों में धार्मिक कारण भी एक प्रमुख कारण हैं। मथुरा, वृन्दावन और गोवर्धन में तो ऐसा प्रतीत होता है कि यहां के प्रवासियों को यहां की धार्मिक संस्कृति केवल भारत के विभिन्न भागों से ही नहीं वरन् विदेशों से भी अपनी और आकृषित करती रही है।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः पर धर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।।
(भागवद् गीता 177)।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वाजपेयी, श्रीकृष्ण दत्त (1955) ब्रज का इतिहास, मथुराः बैजनाथ दारी प्रकाशन, पृ.सं. 273–238*
2. *भक्ति, विषय फाल्गुन कृष्ण द्वितीया 2054 'ब्रज मोहिनी' वृन्दावनः ब्रजनिधि प्रकाशन पृ.सं. 126–130*
3. *मीतल, प्रभूदयाल (1968) ब्रज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास, भाग दो. दिल्लीः नेशनल पब्लिसिंग हाउस पृ0सं0 6–335*
4. *स्वामी शक्ति विकास (1994) भारत के युवकों को सन्देश, बम्बईः श्रीकृष्ण एण्टरप्राइजेज दादर पृसं0 1–8*
5. *श्रीमद्भागवत गीता (तत्व विवेचनी हिन्दी टीका), द्वितीय अध्याय, गोरखपुरः गीता प्रेस।*
6. *Dineshappa, S and Sreenivasa, K. N. (2014).Social Impact of Migration in India. International Journal of Humanities and social Science Invention. Vol.3. Issue 5. May 2014.*
7. *Census of India (2001). Office of the Registrar General & Census Commissioner. India. Ministry of Home Affairs. Govt. of India. http://censusindia.gov.in/census_And_You/migrations.aspx*
8. *Nathaniel, O.N. (2016). The Economic Impact of Immigration on Kassel, Germany: An Observation.International Jpirnal of Economic, Commerce and Management, Vol. IV. Issue. 11. Nov. 2016.*
9. *Gupta, K. Vashudha. (1990-91). Causes and Coursequences of Rural Urban, Migration P. 1-5.*
10. *Picot, G (2013). Economic and Social Objective of Imigraion: The Evidence that Informs Immigration Level and Education Mix. Canada: Research and Evalution.*
11. *Sapovadia, V. (2015). Analyzing Indian Diaspora: Pyramid Impact on Reforms and Migration Pattern. Online at https://mpra.ub.uni-muenchen.de/63609/ MPRA Paper No. 63609, posted 14 April 2015 04:59 UTC*
12. *Singh, A. (2009). A Study of Illigal Immigration into North-East India: The Case of Nagaland. New Delhi Institute of Defence Studies and Analyses.*
13. *The Random House Dictionary of the English Language. Bombay: Allied Publishers Pvt. Ltd. Page 82-664.*